[Maru et. al., Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Feb 08, 2018 - Accepted: Mar 20, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1218549

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

सम्प्रेषण दक्षता विकास में नाट्यीकरण प्रक्रियाओं की भूमिका

रविन्द्र कुमार मारू [*1]**, डॉ. गिरिराज भोजक** [2]
[*1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
[2] सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

सार-

एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में सम्प्रेषण सम्बन्धित बहुत सी समस्याएं देखी जा सकती हैए ये किसी विद्यार्थी की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयी भी हो सकती है। ऐसे में सम्प्रेषण कौशल के क्रमिक विकास के अवरुद्ध हो जाने के अलावा, उसमें सम्प्रेषण से सम्बन्धित कई ऐसी व्याधियां प्रविष्ठ हो सकती हैं जो कालान्तर में उसके समग्र विकास को प्रभावित करती है। इस नितांत गम्भीर विषय पर एक गहन चिन्तन व चर्चा करना ही इस शोध.पत्र का मूल उद्देश्य है।

मुख्य शब्द – सम्प्रेषण; दक्षता; विकास और नाट्यीकरण प्रविधियां.

Cite This Article: रविन्द्र कुमार मारू, डॉ. गिरिराज भोजक. (2018). "सम्प्रेषण दक्षता विकास में नाट्यीकरण प्रक्रियाओं की भूमिका." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(3), 293-297. https://doi.org/ 10.5281/zenodo.1218549.

1. प्रस्तावना

आज का युग सम्प्रेषण और प्रदर्शन का युग है, विद्यार्थी जीवन में ही सम्प्रेषण क्षमता का सर्वाधिक विकास सम्भव है। विद्यार्थी अपने विचारों एवं अभिव्यक्तियों को समाज के अन्य घटकों के समक्ष सम्प्रेषित करने की कला सीखता है।

हमारे विचार, सोच और भावनाओं को अन्य लोगों तक पहुंचाना ही सम्प्रेषण है। मनुष्य जन्म से मृत्यु तक स्वयं के मनोभाव लोगों तक पहुंचाता रहता है। सम्प्रेषण को परिभाषित करते हुए **डॉ लक्ष्मीलाल ओड** ने लिखा है- "सम्प्रेषण तभी प्रभावी बनता है, जब विद्यार्थी मनन करे, ना कि निष्क्रिय भाव से सुन ले या समझ ले।" **पाब्लो फ्रेरे** के शब्दों में- "सम्प्रेषण ही सच्ची शिक्षा है, वह शिक्षण की रीढ़ है, सम्प्रेषण के बिना अध्यापन सम्भव नहीं है।" **पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों** के अनुसार "सम्प्रेषण केवल शाब्दिक ही नहीं होता, अशाब्दिक अर्थात शरीर के हावभाव से भी होता है।"

एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में सम्प्रेषण सम्बन्धित बहुत सी समस्याएं देखी जा सकती है, ये किसी विद्यार्थी की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयी भी हो सकती है। विद्यार्थी का सम्प्रेषण कौशल तात्कालीन परिवेश से भी असंगत हो जाता है। ऐसे में सम्प्रेषण कौशल के क्रमिक विकास के अवरुद्ध हो जाने के अलावा, उसमें सम्प्रेषण से सम्बन्धित कई ऐसी व्याधियां प्रविष्ठ हो जाती हैं, जो कालान्तर में उसके समग्र विकास को प्रभावित करती है। विदित रहे कि नकारात्मक

[Maru et. al., Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Feb 08, 2018 - Accepted: Mar 20, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1218549

सम्प्रेषण ही वर्तमान समय में बच्चों- अभिभावक-परिवार, विद्यार्थी-शिक्षक-शिक्षणतन्त्र तथा नागरिक-समाज-व्यवस्था में टकराव का कारण बन रहा है। किशोरावस्था में विद्यार्थीयों से सम्बन्धित मूल समस्याएं- उपलब्धी स्तर में कम प्राप्तांक होना, सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भाग नहीं लेना, कम मित्र होना, विद्यालय या कक्षाओं/शिक्षकों के प्रति स्थायी नकारात्मक भाव बना लेना, आत्मविश्वास की कमी, भोजनावकाश एवं विद्यालय उपरान्त स्वयं को अलग-थलग रखने की प्रवृत्ति आदि हैं। उक्त समस्याएं प्रभावी सम्प्रेषण की कमी के चलते ही होती है। वर्तमान समय में विद्यार्थी पढने में कितना ही होशियार हो यदि वह स्वयं को सम्प्रेषित नहीं कर पा रहा है, तो ये निश्चय ही चिंताजनक बात है। वहीं पढने में औसत विद्यार्थी यदि स्वयं को प्रदर्शित कर पा रहा है, तो सफल होने के अवसर ज्यादा माने जायेंगे।

विद्यार्थी सम्प्रेषण विकास का अध्ययन मनोविज्ञान निहित है। यह प्रशिक्षण मनोविज्ञान के अधिक समीप है। इसलिए इसे प्रशिक्षण मनोविज्ञान का ही अंग मानते है। **लेव व्योगोत्सकी** का मानना था कि बालक दैनिक जीवन में प्रत्ययों व अवधारणाओं से भी सीखता है।विद्यार्थी समूह, अध्यापकों एवं संदर्भित ढाँचे से सीखते हैं, जब बालक के सम्मुख वयस्कों द्वारा पूर्व स्थापित अवधारणा को प्रस्तुत किया जाता है तो उसे अपनी स्मृति में धारण कर लेता है। इसके पश्चात वह उस सामान्यीकरण पर स्वयं विचार करता है। लेकिन बालकों को अपने साथियों से प्रभावित भी होना चाहिए और स्वयं का अन्वेषण करते रहना चाहिए।

महान वैज्ञानिक **चार्ल्स डार्विन** की “द एक्सप्रेशन आफ द इमोशन इन एनिमल”)1872(में प्रकाशित पुस्तक चेहरे की भावाभिव्यक्ति और बाडी लेंग्वेज के आधुनिक अध्ययनों की बीज थी, डार्विन का तर्क था कि सभी स्तनपायी अपने चेहरे पर भावाभिव्यक्ति दर्शाते हैं। सुप्रसिद्ध लेखिका **शोभना खंडेलवाल** ने सम्प्रेषण को समझाते हुए बताया है कि - “वास्तव में सम्प्रेषण, कहे गये या लिखित शब्दों से कहीं अधिक होता हैA सम्प्रेषण में अनेक बातों का योग होता है, जैसे-प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में जाने या अनजाने शब्दों का प्रेषण, प्रवृत्तियाँ, भावनाएँ, क्रियाएं, इशारे या स्वर। कभी-कभी शान्ति भी प्रभावपूर्ण सम्प्रेषण का कार्य करती है, उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के मुखारविंद पर पड़े हुए बल अस्वीकृति को इतनी स्पष्ट भाषा में प्रकट करते हैं जो सौ शब्दों द्वारा भी प्रकट नहीं की जा सकती। इसी प्रकार कहने का ढंग या मनुष्य की वाणी भी कभी-कभी शब्दों से अधिक प्रभावपूर्ण होती है।”

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अनुशासन के नाम पर विद्यार्थियों के कानों को “शटअप”, “सिट प्रोपरली”, “फिंगर ऑन दी लिप्स”, जैसे उत्प्रेरक नारों से गुंजायमान कर देती है, फलस्वरूप उसकी कोमल किन्तु मौलिक अभिव्यक्ति की भावनाओं पर लगाम लग जाती है। जरूरत है उनके जिज्ञासु बाल रथों को उनके नैसर्गिक पथों पर स्वतंत्र विचरण कराने की। और इस हेतु जरूरत होगी उनके मस्तिष्क और शरीर को अनुमति देने की, एक ऐसे तालमेल को स्थापित करने के लिए, जो ना सिर्फ विद्यार्थी विशेष की सम्प्रेषण दक्षता को बढावा देगी अपितु उसके मानसिक विकास को उचित अवसर प्रदान करते हुए हुए उनके उपलब्धि स्तर को एक सफल भावी जीवन की राह अग्रसर करेगी।

वर्तमान में कोटा (राजस्थान) के एक निजी विद्यालय में कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के साथ चल रहे उक्त शोध में ड्रामा नाट्य प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है। शिक्षा प्रक्रिया में नाट्यीकरण प्रक्रियाओं का अनुप्रयोग कक्षा में सीखने-सिखाने के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। इस शोध में विविध थिएटर प्रक्रियाओं एवं तत्वों यथा थियेटर गेम्स, रोल प्ले**,** इम्प्रुवाइजेशन, वार्ता, समूह-वार्ता, हॉट-सीट, आदि के माध्यम से विद्यार्थियों के वैयक्तिक विकास के विविध आयामों में से सम्प्रेषण दक्षता में विकास के साथ उपलब्धि स्तर प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तावित शोध की विषय-वस्तु पर भारत में किये गये कार्यों की संख्या कम है**,** तथापि विदेशों में इस प्रकार के अध्ययन व्यापक स्तर पर किये जा रहे है और उनके परिणाम नियत स्थानों पर नियमित रूप से लागू भी किये जा रहे है। शिक्षा में रंगमंच के विषय पर कई महानुभावों, साहित्यकारों, शिक्षाविदों नाटककारों, इतिहासकारों एवं विविध संस्थाओं ने अपने लेख, अध्ययन, अनुभव, विचार, आदि प्रकाशित एवं प्रसारित किये हैं जो सहज ही अवलोकन एवं पुनरावलोकन हेतु उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ निम्नानुसार है:- **स्वर्ण रावत** ने थियेटर का शिक्षा में महत्व को जानने के

(Received: Feb 08, 2018 - Accepted: Mar 20, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1218549

उद्देश्य से किये गये एक सर्वे शोध में विभिन्न थियेटर कलाकारों एवं थियेटर शिक्षाविदों के इस क्षेत्र में दिए गये उनके योगदान का विविध पहलुओं का अध्ययन किया और निष्कर्षित करते हुए उक्त अनुसन्धान में अनुसन्धानकर्ता ने पाया कि माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी अपने जीवन में किसी ना किसी रोल मोडल से प्रभावित होते हैं। संदर्भित शोध के अनुसार विद्यार्थियों की इसी मनोवृत्ति को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को निम्नानुसार विद्यार्थियों के साथ शैक्षिक व्यवहार करना चाहिए:-

- ऐसे चरित्रों का निर्माण करे जिससे विद्यार्थी प्रभावित हों।
- उक्त चरित्र के अच्छे एवं बुरे पक्ष से अवगत कराते हुए विद्यार्थी में विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करते हुए उनकी निर्णयात्मक समझ को जागृत करना ।
- वास्तविक एवं काल्पनिक कहानियों एवं प्रसंगों के मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक भावना विकसित करना।

चालुर्वराजास्वामी ने माध्यमिक विद्यार्थियों की थियेटर दक्षता, नैतिक निर्णय और भावनात्मक बुद्धि पर थियेटर प्रक्रियाओं के प्रभाव को जानने के उद्देश्य पर आधारित अपने प्रयोगात्मक अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि प्रयोगात्मक समूह के छात्र-छात्राओं में नियंत्रित समूह के छात्र-छात्राओं की तुलना में अधिक थियेटर दक्षता, नैतिक निर्णय और भावात्मक बुद्धि पाई गई।

चालुर्वराजास्वामी ने अपने उक्त अध्ययन में स्वयं (व्यक्ति) के विकास हेतु थियेटर कला की महत्ता प्रतिपादित करते हुए चिंता जताई कि बहुत ही शक्तिशाली एवं प्रभावी कला होने के बावजूद वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे सबसे कम प्रयुक्त होने वाली कला है । उन्होंने कला के दृश्य एवं प्रदर्शन कला को पाठ्यक्रम में सीखने-सिखाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि यह सिर्फ मनोरंजन मात्र का साधन ना होकर बच्चों को इन क्षेत्रों में अपनी योग्यता एवं दक्षता की समझ विकसित करनी चाहिए। कला के विषय सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों को देश की प्रचुर एवं विविध कलात्मक परम्पराओं एवं विरासतों से परिचित कराया जाना चाहिए।

2. नाट्यीकरण प्रक्रियायें

विद्यार्थी में सम्प्रेषण सम्बन्धित समस्याओं के निस्तारण हेतु कई प्रयास किये जाते हैं जिनमें प्रमुख हैं- विद्यार्थियों से शिक्षकों/अभिभावकों द्वारा वार्तालाप करना, उन्हें सुनना और छूने वाले मुद्दों का सही तरह से निष्पादन करना, रोल प्ले, दैहिक भाषा के रहस्य खोलना, वर्ड गेम खेलना, समालोचनात्मक रवैया रखना, पत्रकारिता या ब्लोगिंग हेतु प्रोत्साहित करना, आदि। परन्तु इन सब से कुछ अलग एक माध्यम है- नाट्यीकरण प्रक्रियाएं– जो ना सिर्फ उनकी सम्प्रेषण कला में निखार लायेगी अपितु उनकी नकारात्मक सम्प्रेषण को सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करेगी। एक नाटक के प्रमुख तत्व/अवयव निम्न प्रकार से होते हैं:-

1) कथावस्तु
2) पात्र
3) रस (भाव)
4) अभिनय

उक्त तत्वों के संयोग से ही एक नाटक का जन्म होता है। कथानक के साथ प्रारम्भ करने से लेकर नाटक की प्रस्तुति तक होने वाली प्रक्रियाओं को नाट्यीकरण प्रक्रियाएं कहते हैं। यह प्रक्रियाएं नाटक के निर्माण की अपेक्षा अन्य कई पहलुओं में अधिक महत्वपूर्ण एवं व्यवहारिक होती है।

डॉ अगम दयाल अपनी पुस्तक "कम्युनिकेशन कला एवं बोडी लेंग्वेज" में सम्प्रेषण को तीन प्रकार से- मौखिक, लिखित एवं हाव-भाव जिसमें दैहिक भाषा भी सम्मिलित है, होने का वर्णन करते हैं और सम्प्रेषण हेतु प्रयुक्त होने वाली

[Maru et. al., Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Feb 08, 2018 - Accepted: Mar 20, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1218549

विविध तकनीकों और प्रक्रियाओं का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हैं, जो कि रंगमंच के मूल तत्वों को ही इंगित करती है।

सम्प्रेषण कौशल विकास हेतु निम्नांकित नाट्यीकरण/रंगमंचीय प्रक्रियाएं अति महत्वपूर्ण है:-

प्रविधियां/प्रक्रियाएं	**सम्प्रेषण में उपयोगिता**
स्क्रिप्ट रीडिंग	उच्चारण, व्याकरण, शब्द-ज्ञान
हाव-भाव एवं मुद्राएं	भावात्मक अभिव्यक्ति
मूकाभिनय	अभिव्यक्ति
कथा वाचन एवं नरेशन	परिस्थितियों मे सामंजस्य एवं आत्मविश्वास
आंगिक संचलन	मानसिक एवं शारीरिक तालमेल
हॉट सीट	आत्मविश्वास एवं सजगता
चरित्र चित्रण	ब्रेकिंग आफ कोंक्रिट इमेजेज
अभिनय	चरित्र की समझ, सहजता, नवानुभव
कहानी का निर्माण	विवेक एवं क्रियेटिविटी
ध्वनि	समझ एवं समन्वय
नृत्य एवं गीत-संगीत	सांस्कृतिक समझ
एक्सचेंज आफ केरेक्टर	ब्रेकिंग आफ रिजिडिटी
गति में विविधता	अनुकूलन
एम्फेसिस	लाईफ टाईम अंडरस्टेंडिंग
इमेजिनेशन	कल्पना शक्ति का विकास
थियेटर गेम्स	मनोरंजन, स्मरण-शक्ति, समन्वयता, एकाग्रता
प्रोपर्टीज, सेट, स्टेज	रचनात्मकता
स्टिल इमेज	ऑब्जरवेशन
थोट ट्रेकिंग	ऑब्जरवेशन
प्रकाश	समझ एवं समन्वय

3. निष्कर्ष

एक विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास के सन्दर्भ में प्रभावी सम्प्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैA प्रभावी सम्प्रेषण हेतु महत्वपूर्ण माने गये विविध बिन्दुओं का नाटकीय प्रस्तुति में प्रमुख रूप से प्रयोग होता है। यही कारण है कि एक नाटक दर्शकों के समक्ष अपना मूल प्रयोजन पूरी तरह से सम्प्रेषित कर पाता हैA विदित रहे कि एक औपचारिक नाटकीय प्रस्तुति विविध अनौपचारिक प्रक्रियाओं से परिशोधित होकर बनने वाला अंतिम उत्पाद होता है, जो प्रतिभागी को स्वाभिव्यक्त करने का एक ऐसा विश्वसनीय अवसर प्रदान करता है जहां वह अपने अचेतन मन की गांठों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सम्प्रेषित कर पाता हैA विद्यार्थी या नाटक के प्रतिभागियों के लिए जाने-अनजाने ही ये नाट्यीकरण प्रक्रियाऐ उनकी सम्प्रेषणात्मक त्रुटियों को सुधार देती है।

अभिभावकों और शिक्षकों को प्रभावशाली सम्प्रेषण कौशल हेतु विद्यार्थियों की शारीरिक भाषा का प्रेक्षण करते रहना चाहिए। उनकी शारीरिक भाषा, हाव-भाव, चेहरे की अभीव्यक्ति, आँखों का सम्पर्क, वस्त्र-विन्यास, बालों की बनावट, ध्वनी, स्वरमान, गति, आवाज की गुणवत्ता, बोलने का तरीका, शब्दों का उच्चारण, सुलेखनी, शब्दों की बनावट, मनोभावों- क्रोध, घृणा, भय, प्रसन्नता, उदासी, आश्चर्य, आदि पर ध्यान देना बेहद आवश्यक प्रतीत होता है। साथ ही समस्यात्मक विद्यार्थीयों को थिएटर सम्बन्धित विविध प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समय-समय पर नाट्य कार्यशालाएं आयोजित करते रहना चाहिए ।

(Received: Feb 08, 2018 - Accepted: Mar 20, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1218549

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] शर्मा, त्रिपुरारी **(2015):** रंग-प्रसंग, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्लीA
[2] दयाल, डा0 अगम **(2011):** कम्युनिकेशन कला एवं बाडी लेंग्वेज, पुस्तक महल, नई दिल्लीA
[3] महता, डी.डी. **(2010):** शैक्षिक तकनीकी, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवाड़ी
[4] शैक्षिक तकनीकी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
[5] Rawat, Suwarn.–Theatre: its significance in education. Punjab University– 2008
[6] Chaluvarajaswamy, K.T. –Effect of theatre education activities on theatre proficiency moral judgement and emotional intelligence of secondary school students. University of Mysore–2014)

*Corresponding author.
E-mail address: ravindermaru@ gmail.com